पंजीयन संख्या : 68939 /98 अंक – 24, वर्ष – 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

436

- : सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 01/11/2023

प्रकाशन की तारीख 16/10/2023

पाक्षिक मूल्य – 2.50/- (दो रूपये पचास पैसे)

पेज संख्या - 24

“ शराफत छोड़ो, समझदार बनो ”

“ सुनो सबकी, करो मन की ”

“ समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता ”

“ समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार ”

“ चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे ”

“ हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए ”

विविध विषयों पर बजरंग मुनि जी के महत्वपूर्ण विचार-

1– नेहरू परिवार की राजनीति सांप्रदायिक और स्वार्थी।

कुछ दिन पहले मणिशंकर अय्यर ने एक बहुत महत्वपूर्ण बात कही है। उनके अनुसार कांग्रेस पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री बनाए गए नरसिम्हा राव वास्तव में भारतीय जनता पार्टी से मिले हुए थे। मुझे भी यह बात सही लगती है कि नेहरू परिवार के विरुद्ध यदि देश में कोई भी कुछ सोचता है तो नेहरू परिवार और उनके एजेंट उसे भारतीय जनता पार्टी का मानते हैं चाहे वह कांग्रेस में हो या अन्य किसी भी पार्टी के साथ हो। नेहरू परिवार ही कांग्रेस है और कांग्रेस नेहरू परिवार है यह मान्यता 75 वर्षों से चली आ रही है। स्पष्ट है कि नरसिम्हा राव ने पंडित नेहरू की आर्थिक नीतियां भी बदल दी और उन्होंने सामाजिक नीतियों को भी बदला। नेहरू परिवार लगातार मुस्लिम सांप्रदायिकता को प्रोत्साहित कर रहा था नरसिंह राव ने इस लाइन को भी बदला और धर्मनिरपेक्षता की दिशा पकड़ी। यह नेहरू परिवार को पसंद नहीं था लेकिन नेहरू परिवार यह बात कभी बोलता नहीं था। मणिशंकर अय्यर ने इस रहस्य का उद्घाटन कर दिया। अब नेहरू के प्रशंसक इस पर क्या बोलेंगे यह तो अभी पता नहीं है लेकिन जो भी कहा गया वह पूरी तरह सच है। मैं तो बचपन से लेकर आज तक लगातार यह बात बोलता रहा कि नेहरू परिवार सांप्रदायिक है, नेहरू परिवार स्वार्थी है, नेहरू परिवार से भारत की राजनीति को मुक्त होना चाहिए। वर्तमान में मेरी बात बिल्कुल सच निकल रही है।

2–भारतीय संविधान तंत्र की मुट्ठी में कैद।

भारत का संविधान हमारे तंत्र की एक मुट्ठी में कैद रहता है। तंत्र जब चाहे संविधान में मनमाना बदलाव कर सकता है। दूसरी ओर भारत का संविधान तंत्र की एक सुरक्षा कवच के समान है। तंत्र हमेशा घोषित करता है कि वह संविधान के अनुसार ही कार्य कर सकता है संविधान से हटकर नहीं, लेकिन वही तंत्र संविधान में संशोधन भी कर देता है। यह हमारे देश की एक विचित्र विडंबना है। हमारे संविधान निर्माताओं ने दुनिया के संविधानों की नकल करके एक नया संविधान बना दिया। उन्होने यह कभी नहीं सोचा था की संविधान तंत्र से ऊपर होता है। इसलिए संविधान में संशोधन के अंतिम अधिकार तंत्र को नहीं दिए जा सकते। अब भी समय है कि हम अपने पूर्वजों की इस गलती को सुधार करें।

3–श्रम शोषण का मुख्य आधार।

दुनिया में सभी बुद्धिजीवी किसी न किसी तरीके से श्रम शोषण की नीतियां बनाते रहते हैं। भारत में जन्म के आधार पर वर्ण और जाति व्यवस्था तथा पश्चिम में पूंजीवाद को श्रम शोषण का मुख्य आधार बनाया गया। वर्तमान भारत में श्रम शोषण के लिए चार प्रकार के हथियार प्रयोग में लाए जाते हैं–(1) जातीय आरक्षण (2) शिक्षित बेरोजगारी (3) कृत्रिम उर्जा मूल्य नियंत्रण (4) न्यूनतम श्रम मूल्य वृद्धि की सरकारी घोषणाएं। बुद्धिजीवियों ने बहुत चालाकी से प्रत्यक्ष सहायता कर तथा श्रम शोषण के सिद्धांतों को अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग बना दिया।

4– पिछड़े देश को आत्मनिर्भर बनने में रोड़ा बन रहे विकसित देश।

विकसित देशों की मुख्य समस्या यह है कि यदि अति पिछड़े देशों के लोगों ने निर्मित माल का आयात कम कर दिया तो विकसित देशों में लोगों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा और उत्पादन कम करना होगा। नौकरियां भी जाएगी, वेतन भी घटेंगे और कुल मिलाकर जीवन स्तर भी कमजोर हो जाएगा। इसलिए विकसित देश अपना निर्यात बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार के प्रयास करते रहते हैं। साथ ही वे यह भी प्रयत्न करते हैं कि पिछड़े देश किसी भी दृष्टि से आत्मनिर्भर न हो सके इसके लिए विकसित देश पिछड़े देश में अपने एजेंट बनाकर रखते हैं जो उन देशों में हड़ताल करते हैं या अन्य प्रकार के आंदोलन करते हैं। पर्यावरण की बहुत चिंता करते हैं। वह महंगाई का झूठा हल्ला करते हैं जिससे यह पिछड़े हुए देश–विदेश से आयात कर सके और उसका अपना उत्पादन न बढ़ा सके। आज भारत ऐसे विदेशी एजेंटो से ज्यादा परेशान हो रहा है।

5–सरकारीकरण की तुलना में बाजारीकरण कई गुना कम घातक।

पश्चिम की अर्थव्यवस्था भीमकाय बहुराष्ट्रीय कंपनियों के चंगुल में है, भारत की अर्थव्यवस्था सरकार के चंगुल में है। हमपहले अपनी अर्थव्यवस्था को सरकारी चंगुल से मुक्त कर ले तब हम बहुराष्ट्रीय कंपनियों की समीक्षा करें। सरकारीकरण की तुलना में बाजारीकरण कई गुना कम घातक है। बाजारीकरण विरोधी जमात किसी न किसी रूप में सरकारीकरण के एजेंट होते हैं। वे विकल्प तो देते नहीं उनका तो बस एक ही काम होता है कि घुमा फिरा कर स्वतंत्र बाजार व्यवस्था की आलोचना की जाए। इस प्रकार के सरकारीकरण के एजेंटों से हमें बचाना चाहिए। हमें संपूर्ण निजीकरण का समर्थन करना चाहिए।

6–सोनिया गांधी के पुत्र मोह से मनमोहन सिंह की आर्थिक उपलब्धियां कमजोर रही।

अब तक भारत में जो भी प्रधानमंत्री हुए हैं उनमें सबसे अच्छी अर्थनीति मनमोहन सिंह की मानी जाती है। मनमोहन सिंह ने वित्त मंत्री रहते हुए भी भारत की अर्थव्यवस्था को बहुत अच्छी दिशा दी। प्रधानमंत्री के कार्यकाल में भी मनमोहन सिंह जी ने बहुत अच्छे प्रयत्न किये। वह मनरेगा के लिए हमेशा याद किए जाएंगे। फिर भी मनमोहन सिंह के कार्यकाल के बहुत अच्छे परिणाम नहीं निकल सके क्योंकि मनमोहन सिंह को आर्थिक मामलों में जितनी स्वतंत्रता नरसिम्हा राव के वित्तमंत्री कार्यकालमें थी उतनी स्वतंत्रता प्रधानमंत्री के कार्यकाल में नहीं रही। सोनिया जी ने पुत्र मोह में पड़कर मनमोहन सिंह की आर्थिक उपलब्धियों को कमजोर करना शुरू किया। मनमोहन सिंह के ऊपर 16 वामपंथियों की एक ऐसी कमेटी बना दी गई जो मनमोहन सिंह को स्वतंत्रता से काम नहीं करने देती थी। दो–तीन वर्षों के बाद ही नरेगा को पूरी तरह से असफल कर दिया गया और उसके उद्देश्य समाप्त कर दिए गए। सोनिया जी चाहती थी कि मनमोहन सिंह अब खुद से परेशान होकर राहुल के लिए त्यागपत्र दे दे, और मनमोहन सिंह चाहते थे कि सोनिया जी जब भी कहे मैं तुरंत त्यागपत्र दे दूंगा। इसी उधेड़बुन में कांग्रेस की सत्ता चली गई अन्यथा मनमोहन सिंह जीवनभर प्रधानमंत्री रह सकते थे। आज भी मनमोहन सिंह की ईमानदारी, लोकतंत्र के प्रति निष्ठा, नरेगा योजना की शुरुआत जैसे ऐतिहासिक क्षण याद किए जाते हैं। मैं खुले दिल से मनमोहन सिंह का प्रशंसक हूँ।

7– अच्छे लोगों को संसद में भेजने की मुहिम पूरी तरह अव्यावहारिक।

कुछ लोग यह मांग करते हैं या उनका मानना है कि संसद में अच्छे लोगों के जाने से ही समस्याओं का समाधान होगा लेकिन मैं उनसे सहमत नहीं हूँ। संसद में अच्छे लोग पहुंच ही नहीं सकते और दो–चार पहुंच भी गए तो अच्छे रहेंगे नहीं। इक्का–दुक्का बच गया तो उनको किसी न किसी बहाने संसद से निकाल दिया जायेगा। सन 1950–60 सरीखी अच्छे लोगों की संसद, बुराई को बढ़ने से नहीं रोक पायी तो अब कुछ अच्छे लोगों को संसद में पहुंचाने की मुहिम क्या परिवर्तन कर पाएगी? बाबा रामदेव, अन्ना हजारे या जयप्रकाश नारायण ऐसा ही प्रयत्न करते–करते थक गए लेकिन समस्या बिगड़ती चली गयी क्योंकि सौद्धांतिक रूप से 'पावर करप्ट्स ए मैन'। यदि अच्छे आदमी को भी पावर दे दिया जाए तो उसके बुरे होने की संभावना अधिक है और बुरे आदमी का पावर छीन लिया जाए तो उसमें सुधार होने की अधिक गुंजाइश है। इसलिए अच्छे लोगों को संसद में भेजने की मुहिम पूरी तरह अव्यावहारिक है। तंत्र के पावर घटा दीजिए सभी समस्या सुलझ जायेगी।

8– नेहरू परिवार की निष्ठा देश और समाज के प्रति संदिग्ध।

स्वतंत्रता के बाद नेहरू ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए देश और समाज को बहुत नुकसान पहुंचाया। पंडित नेहरू ने जीवन भर अपने परिवार की चिंता की और गांधी की सभी नीतियों को पलट दिया। पंडित नेहरू ने अपने स्वार्थ के कारण हिंदुत्व को भी बहुत नुकसान पहुंचाया। उन्होंने सांप्रदायिक मुसलमानों के साथ मिलकर हिंदुत्व को कमजोर करने का भरसक प्रयत्न किया। नेहरू परिवार भी अब तक उसी लाइन पर चल रहा है। नेहरू परिवार ने हमेशा अपनी पारिवारिक सत्ता का षड्यंत्र किया। नेहरू परिवार ने गांधी विचार को धोखा देने के लिए गांधीवादियों को संपत्ति का लालच देकर अपने साथ जोड़ लिया। नेहरू परिवार ने लाल बहादुर शास्त्री, मोरारजी देसाई, नरसिम्हा राव, मनमोहन सिंह सरीखे अच्छे कांग्रेसियों को भी किनारे करने की भरसक कोशिश की। आज भी नेहरू परिवार हिंदुत्व के खिलाफ कुछ न कुछ षडयंत्र करता रहता है। वर्तमान समय में देश की राजनीति को नेहरू परिवार से मुक्त होना चाहिए क्योंकि इस परिवार की निष्ठा देश प्रति भी संदिग्ध है और समाज के प्रति भी।

9– समाज में टकराव का कारण अब तक आरक्षण का जारी रहना।

कोई दवाई बीमारी के समय खायी जाती हैं तो वह लाभदायक होती है किंतु बीमारी ठीक होने के बाद भी यदि दवाई स्वाद के रूप में खाना जारी रखा जाए तो उसके दुष्परिणाम भी होते हैं। 10 वर्षों के लिए आरक्षण को एक दवा के रूप में स्वीकार किया गया था लेकिन 70 वर्षों के बाद भी आरक्षण का जारी रहना समाज में टकराव का कारण बन रहा है। आज मणिपुर में जो टकराव दिख रहा है उसका कारण भी यही आरक्षण की नीति है। महाराष्ट्र में भी मराठा आरक्षण की मांग जोर पकड़ रही है। राजस्थान और हरियाणा भी समय–समय पर आरक्षण की आग में जलता रहता है। आरक्षण की शुरुआत ही गलत थी। आरक्षण की जगह योग्यता का विस्तार किया जाता, श्रम को अधिक महत्व दिया जाता लेकिन उस समय दबाव की राजनीति ने जो समस्या पैदा की वह समस्या आज पूरे देश के लिए नासूर बनती जा रही है। आरक्षण का लाभ प्राप्त कर चुके लोग अधिक से अधिक मजबूत होकर आरक्षण को स्थायी बनाना चाहते हैं तो आरक्षण से प्रभावित एक बड़ा वर्ग इन कमजोर लोगों को अपना प्रतिद्वंद्वी मानकर कुछ न कुछ नया मार्ग खोजना चाहता है। इसलिए मणिपुर, महाराष्ट्र, हरियाणा, राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे देश में आरक्षण के नाम पर टकराव बढ़ सकता है। इसका समाधान इस प्रकार का होना चाहिए कि कमजोरों की शक्ति बढ़े और मजबूत उन्हें अपना प्रतिद्वंद्वी न माने। समाधान के रूप में समान नागरिक संहिता और श्रम मूल्य वृद्धि के तरीके सफल हो सकते हैं।

10–दुनिया में एक मात्र हिंदू ही हैंजो गुणों को महत्व देता है संगठन को नहीं।

मैं हिंदू हूँ क्योंकि मेरा जन्म हिंदू परिवार में हुआ। मैं हिंदू होने पर गर्व करता हूँ, क्योंकि मैने अनुभव किया कि हिंदू जीवन पद्धति के आधार पर अपने को हिंदू मानता है, पूजा पद्धति के आधार पर नहीं। दुनिया में हिंदू ही ऐसा समूह है जो गुणों को महत्व देता है संगठन को नहीं। हिंदुओं को छोड़कर दुनिया में जो भी लोग अपने को धार्मिक कहते हैं वे पूजा पद्धति को आधार मानते हैं। संगठन को महत्व देते हैं। संख्या विस्तार की छीना–झपटी करते हैं। मैं कभी–कभी सोचता हूँ कि यदि मेरा जन्म इस्लाम परिवार में हुआ होता तब मैं हिंदू जीवन पद्धति के आधार पर जिंदा नहीं रह पाता क्योंकि अन्य धर्म में स्वतंत्रता नहीं है अनुशासन है। हिंदू धर्म ही एकमात्र है जहां जीवन जीने की पूरी स्वतंत्रता है। यह स्वतंत्रता इस सीमा तक है कि कोई हिंदू होते हुए भी नास्तिक हो सकता है। यहां तक कि वह हिंदू धर्म को समाप्त करने की भी घोषणा कर सकता है। आप विचार कीजिए कि मुसलमान में अहमदिया संप्रदाय को कितनी स्वतंत्रता है। दुनिया में हिंदुओं ने अपनों पर भले ही अत्याचार किया लेकिन दूसरों के साथ वसुधैव कुटुंबकम का ही व्यवहार किया। अन्य धर्मावलम्बियों ने अपनों के साथ बहुत एकता निभाई लेकिन दूसरों पर उतने ही अत्याचार किया। इसलिए मुझे हिंदू होने पर गर्व महसूस होता है।

11– जन्मना जाति एक बुराई।

जन्मना जाति एक बुराई है। इस बुराई का विरोध होना चाहिए। इस बुराई के कारण हिंदू समाज का बहुत नुकसान हुआ है। मैं तो बचपन से ही छुआ–छूत का विरोधी था लेकिन जन्मना जाति से मैंने लाभ उठाने की कोशिश नहीं की बल्कि इस बुराई का विरोध करने का प्रयत्न किया। दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने हिंदू धर्म को त्याग दिया और इस बुराई को सुधार करने की अपेक्षा इसका लाभ उठाने की कोशिश की। इस प्रकार स्वार्थी तत्वों में ही करुणानिधि का परिवार तथा भीमराव अंबेडकर भी शामिल है। हिंदू भीमराव अंबेडकर को हिंदू मानता है और भीमराव अंबेडकर अपने को गैर हिंदू कहते हैं। वास्तविकता यह है कि दूसरे धर्म के संगठनों से मिलकर जो लोग हिंदू धर्म की कमजोरी की चिंता करते हैं वे खतरनाक लोग हैं। मेरा फिर भी यह सुझाव है कि जन्मना जाति व्यवस्था को कर्म के आधार पर अपने में सुधार करना चाहिए साथ ही जो भी धार्मिक लोग इस बुराई का लाभ उठाना चाहते हैं उन्हें भी लाभ उठाने से वंचित कर देना चाहिए। उदयनिधि ने हिंदू धर्म को समाप्त करने का जो बयान दिया है वह गलत है किसी गैर हिंदू को इस प्रकार का बयान देने से बचना चाहिए।

12–एक भारत एक परिवार।

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि भारत सरकार ने विश्व सम्मेलन में "One Family One Earth" अर्थात पूरे विश्व के मूल स्वरूप में परिवार भावना होनी चाहिए का नारा दिया। परिवार शब्द का जो संदेश भारत दुनिया को दे रहा है वह संदेश सारे भारत को भी दिया जाना चाहिए। "एक भारत एक परिवार" की भावना पूरे भारत में होनी चाहिए क्षेत्रीयता, जातिवाद तथा सांप्रदायिकता परिवार व्यवस्था में घातक तत्व है। इस दुनिया को संदेश दे रहे हैं यह बहुत स्वागत योग्य बात है। सच बात यह है कि परिवार व्यवस्था का श्रेष्ठ होना ही दुनिया की समस्याओं का समाधान है। जब से परिवार में सामूहिकता का भाव कमजोर हुआ है तभी से समाज में अनुशासन भी कमजोर हुआ है। मैं फिर से भारत सरकार की प्रशंसा करता हूँ।

13–शेर प्रवृत्ति के अंदर भय पैदा करना गाय प्रवृत्ति की एकता से संभव नहीं।

मैंने हिंदू और मुसलमान के बीच गंभीर फर्क अनुभव किया। मुसलमान धर्म को राष्ट्र और समाज से ऊपर मानता है जबकि हिंदू समाज को धर्म और राष्ट्र से ऊपर मानता है। अस्सी प्रतिशत हिंदू किसी धार्मिक संगठन का सदस्य नहीं होता बल्कि सामाजिक संस्थाओं से जुड़ा रहता है। दूसरी ओर अस्सी प्रतिशत मुसलमान या तो संगठनों से प्रत्यक्ष जुड़े रहते हैं या संगठन की सीमाओं से जुड़ी संस्थाओं तक सीमित रहते हैं। अधिकांश हिंदू अपने को गाय के समान मानता है और अधिकांश मुसलमान अपने को शेर की तरह मानता है। इन परिस्थितियों में जब गाय और शेर एक साथ रहते हैं तो यह निर्णय करना कठिन है कि दोनों के बीच एकता कैसे होगी। इन दोनों के बीच एकता का एक ही मार्ग है कि हिंदुओं के अंदर सुरक्षा का भाव मजबूत करना होगा और मुसलमान के अंदर आक्रामकता की सोच नियंत्रित करनी होगी। साफ दिखता है कि यह दोनों कार्य सिर्फ सरकार ही कर सकती है। शेर प्रवृत्ति के अंदर भय पैदा करना गाय प्रवृत्ति की एकता से संभव नहीं है क्योंकि हजारों गाय मिलकर भी एक शेर का सीधा मुकाबला नहीं कर सकती। यह कार्य इसलिए असंभव है कि गायों को एकजुट किया ही नहीं जा सकता भले ही शेर एकजूट हो जाए। यही कारण है की मुट्ठी भर मुसलमान कई सौ वर्षो तक सफलतापूर्वक भारत को गुलाम बनाकर रख सके। हम चाहते हैं कि हमारी राजनैतिक व्यवस्था शेर प्रवृत्ति के लोगों से गाय प्रवृत्ति के लोगों की सुरक्षा की घोषणा करें।

14–गांधी दुनिया के लिए मार्गदर्शक।

कुछ दिन पहले ही भारत में विश्व सम्मेलन समाप्त हुआ।उसमें दुनिया भर के बड़े–बड़े

शक्तिशाली देश के राष्ट्र प्रमुखों ने एक जुट होकर गांधी समाधि पर जाकर गांधी को नमन किया। यह सम्मान सिर्फ गांधी के लिए नहीं था, भारत के लिए नहीं था बल्कि यह सम्मान दुनिया के उन सभी महापुरुषों के लिए था जिन्होंने समाज की समस्याओं के समाधान में अपनी सारी शक्ति लगा दी,अपने जीवन की आहुति दे दी। इस प्रकार के महापुरुषों को इतने समय बाद भी दुनिया याद कर रही है, यह सुनना वास्तव में उन सब लोगों के लिए अविश्वसनीय है। गांधी कोई महामानव नहीं थे, कोई देवता नहीं थे हम आपके समान ही एक व्यक्ति थे जिन्होंने ज्ञान और त्याग को एक साथ जोड़कर समाज के लिए लगाया। मुझे इस बात से दुख हो सकता है कि हम गांधी से आगे बढ़ नहीं पा रहे हैं लेकिन गांधी आज यदि दुनिया के लिए मार्गदर्शक बने हुए हैं तो यह हमारे लिए कम गौरव की बात नहीं है। मैं चाहता हूँकि गांधी की परंपरा आगे इसी प्रकार बढ़ती रहे और हम गांधी से भी आगे निकलकर कुछ ऐसा कर सकें जिससे आगे आने वाली पीढ़ी हमारे लिए भी सम्मानजनक भाषा का प्रयोग कर सके। आइये हम आप सब एक साथ मिलकर गांधी से आगे कुछ करने का प्रयत्न करें।

मुझे कुछ दिन पहले जीवन का चरम सुख प्राप्त हुआ जब भारत में नरेंद्र मोदी के हाथों गांधी का सम्मान हुआ। गांधी पूरी दुनिया में सम्मानित है यह बात पूरी तरह से प्रमाणित है। गांधी का सबसे कम सम्मान वर्तमान भारत में है यह बात भी दुनिया जान रही है। नरेंद्र मोदी मूल रूप से संघ से जुड़े हुए हैं और संघ स्वाभाविक तौर पर गांधी को अच्छा महापुरुष नहीं मानता। इसके बाद भी गांधी का भारत में इतना बड़ा सम्मान हुआ यह वास्तव में हमारे लिए चरम सुख की सोच है। इस प्रयत्न के पीछे 10–20 वर्षों की कोई कोशिश नहीं है बल्कि 35 वर्ष पूर्व जब रामानुजगंज से इस पर्यटन की शुरुआत हुई थी तब यह भी सोचा गया था कि यह प्रयत्न अंतिम रूप से यहां अब तक पहुंच सकेगा।सन 1992में गांधीवादी ठाकुरदास बंग और संघ के राकेश शुक्ला ने मेरे साथ बैठकर यह पूरी योजना बनाई थी और हम निरंतर आगे बढ़ते रहे। गांधीवादियों का भी एक ग्रुप कुमार प्रशांत के नेतृत्व में हम लोगों का विरोध करता रहा। दूसरी ओर संघ का भी एक ग्रुप हम लोग का पूरी तरह विरोधी रहा। आज भी यह दोनों समूह विरोधी हैं लेकिन हम वर्तमान परिस्थितियों में संघ के एक प्रभावशाली समूह और गांधीवादियों के भी एक प्रभावशाली ग्रुप को मिला कर इस टकराव को समाप्त कर सके। जिसके अंतिम परिणाम के रूप में आज गांधी भारत में लगातार सम्मान प्राप्त करते जा रहे हैं। भारत सरकार बहुत अच्छी योजना के अंतर्गत गांधी संस्थाओं को पुनर्जीवित कर रही है। पुराने जिन लोगों ने गांधीवादी संस्थानों पर व्यक्तिगत कब्जा कर लिया है उन सबको निकाला जा रहा है, दूसरी ओर संघ भी लगातार सावरकरवादियों से पिण्ड छुड़ाता जा रहा है। प्रवीण तोगड़िया सरीखे ठेकेदार को बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है। अब संघ और गांधीवाद एक साथ मिलकर वर्तमान दुनिया की समस्याओं का समाधान खोजने की दिशा में एक साथ आगे बढ़ रहे हैं यह मेरे लिए बहुत प्रसन्नता की बात है। गांधी अपनी जगह पर भारत में भी बहुत

सम्मानित है हमें इसके लिए खुशी व्यक्त करना चाहिए। आज हम दुनिया के लोग एक साथ मिलकर इस गीत को गुनगुनायें ''छोड़ो कल की बातें कल की बात पुरानी नया समय है नई ऊर्जा लिख दे नई कहानी हम हिंदुस्तानी!''

15–आचार्य पंकज जी के प्रयत्न प्रशंसनीय।

दक्षिण भारत के एक मंत्री ने सनातन धर्म की आलोचना में कुछ अनुचित शब्दों का प्रयोग किया और उन शब्दों को बार–बार दोहराने का प्रयास किया। इन शब्दों पर देश भर के अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग प्रतिक्रियाएं हो रही हैं लेकिन सबसे अधिक गंभीर प्रतिक्रिया उत्तर प्रदेश की धर्मस्थली वाराणसी से शुरू हुई है। आचार्य पंकज जी के प्रयत्नों से वहां के प्रमुख धर्म गुरुओं ने मिलकर एक अभियान शुरू किया है। इस अभियान में सनातन धर्म जागरण के प्रयत्न होंगे साथ ही इसके विरुद्ध निंदक शब्दों का प्रयोग करने वालों का भी खुला विरोध किया जाएगा। इस प्रयत्न के अंतर्गत भारत के आम नागरिकों के हस्ताक्षर किया हुआ एक ज्ञापन भी राष्ट्रपति जी को दिया जाएगा। जिसमें किसी सीमा से बाहर जाकर सनातन का विरोध करने पर रोक लगाने की मांग भी शामिल है। इस अभियान की प्रेरणा से धर्मनगर ऋषिकेश में उस सनातन विरोधी मंत्री का पुतला भी फूँका गया। मैं आचार्य जी के इन प्रयत्नों का पूरी तरह समर्थन करता हूँ।

16–कम्युनिस्ट, मुसलमान तथा राजनौतिक विपक्ष हिंदुत्व के लिये खतरा।

वर्तमान समय भारत में हिंदू और हिंदुत्व पर जिस तरह का संगठित आक्रमण हो रहा है इस खतरनाक आक्रमण का डटकर मुकाबला करने की आवश्यकता है। मैं मानता हूँकि हिंदू धर्म की मान्यताओं में भी कई जगह रूढ़िवाद आ गया है। इस प्रकार के रूढ़िवाद पर विचार करना और उसको दूर करने की कोशिश करना यह हम आप सबका कर्तव्य है, लेकिन यदि उस रूढ़िवाद का लाभ उठाकर हिंदू विरोधी ताकतें आक्रमण करती हैं तो इस प्रकार के आक्रमण के खिलाफ हम सबको एकजुट हो जाना चाहिए। भले ही हम हिंदुत्व की बुराइयों के शिकार हों क्योंकि वर्तमान भारत में सनातन या हिंदुत्व पर संगठित आक्रमण दिखाई दे रहे हैं और ऐसे आक्रमणों में कम्युनिस्ट, मुसलमान तथा राजनीतिक विपक्ष बहुत आगे बढ़–चढ़कर भाग ले रहा है। मेरी अपने सभी मित्रों को सलाह है कि ऐसे संक्रमण काल में आप एकजुट होकर हिंदुत्व विरोधी ताकतों का मुकाबला करिये। मैं कभी भी रूढ़िवाद का पक्षधर नहीं रहा लेकिन यदि वर्तमान हिंदू विरोधी ताकतों का मुकाबला करने के लिए रूढ़िवादियों का भी समर्थन लेना पड़ेगा तो मैं ऐसा समर्थन लेने के लिए तैयार हूँ लेकिन हिंदुत्व विरोधी ताकतों को सर नहीं उठाने दिया जाए।

17– भारतीय लोकतंत्र में अभी संविधान का शासन न होकर शासन का संविधान है।

ज्ञानहीन सक्रिय लोग ज्ञानवानों से ही मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं यही हमारी परम्परा रही है। भारतीय लोकतंत्र में संविधान का शासन न होकर शासन का संविधान हो गया जिसमें शासन एक व्यक्ति न होकर एक व्यवस्था का हो गया अर्थात जनता शासन को चुन सकती है किंतु चुने जाने के बाद वह सर्वाधिकार संपन्न होगा और उस पर जनता का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा। मेरे विचार से भारतीय संविधान में जब तक संविधान संशोधन के अधिकार में लोक और तंत्र की मिली जुली भूमिका का कोई प्रावधान नहीं होता तब तक यह संविधान हमारे देश के लिए घातक है। इस विषय पर समाज को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

18– सामाजिक विषयों पर शोध का ना होना और पश्चिम की नकल करना घातक।

अपने में तमाम उपलब्धियों के साथ एक समृद्ध इतिहास को समेटे रामानुजगंज छत्तीसगढ़ में स्थित ज्ञानयज्ञ परिवार पिछले 65 वर्षों से सामाजिक विषयों पर गम्भीर शोधों की एक महान सजीव प्रयोगशाला रहा है। मैनें अपने विलक्षण तार्किकता एवं प्रयोगधर्मी स्वभाव से अनेक सामाजशास्त्रीय निष्कर्षों का निष्पादन किया हैतथा "धर्म और राष्ट्र से ऊपर समाज" की अवधारणा प्रस्तुत कर सामूहिकता एवं सहकार की भावना को तार्किक आधार बताया है। एक विशेष बात मेरे द्वारा निकाले अथवा बताए जा रहे निष्कर्ष अंतिम नहीं हैं आप सब मित्रों की सलाह पर यथोचित संशोधन के लिए हम हमेशा सहर्ष तैयार हैं।

भारत में विभिन्न विषयों पर शोध की परिपाटी पिछले कई सौ वर्षो से बंद है परिणाम स्वरुप हमारी मजबूरी है कि हम या तो बिना विचारे पश्चिमी सभ्यता की नकल करें या अपने पूर्वजों की। इन दोनों का अंधानुकरण घातक है, क्योंकि जिस समय में विचार दिए गए, उनमें और आज के देश काल परिस्थिति में बहुत फर्क है और हमारा कर्तव्य है कि हम उन निष्कर्षों को व्यवहारिकता के अनुसार संशोधन करके ही धरातल पर उतारें।

19–निष्कर्ष निकालने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम विचार है और उसको ठीक दिशा देने का आधार है विचार मंथन।

निष्कर्ष निकालने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है विचार और विचारों को ठीक दिशा देने का आधार है विचार मंथन। बहुत प्राचीन काल से सामाजिक विषयों पर निष्कर्ष निकालने के लिए विचार मंथन की अग्रणी भूमिका रही है। निष्कर्ष निकालना और उन्हें क्रियान्वित करने में

देश–काल–परिस्थिति की भी भूमिका होती है। निष्कर्षों का निष्पादन करने वाले महापुरुष यदि जीवित रहते तो देश काल परिस्थिति अनुसार अपने निष्कर्ष की समीक्षा भी करते और संशोधन भी। इसलिए हम लोगों की यह मान्यता है कि मृत महापुरुषों के विचारों को बिना वर्तमान परिस्थितियों से तालमेल बैठाए उपयोग करना अनुचित है।

20– महिला और पुरुष के बीच भेदभाव से परिवार व्यवस्थामें टूटन।

भारत सरकार ने महिला आरक्षण लागू करने का निश्चय कर लिया है। मैं इस समाचार को राजनौतिक समाचार मानता हूँ सामाजिक समाचार नहीं। सिद्धांत रूप से महिला और पुरुष के बीच किसी भी प्रकार का भेदभाव उचित नहीं होता है। इस भेदभाव से परिवार व्यवस्था टूटती है और उसका दुश्परिणाम समाज व्यवस्था पर पड़ता है। मैं सैद्धांतिक रूप से किसी भी प्रकार के आरक्षण के विरुद्ध हूँ। व्यक्ति–व्यक्ति के बीच स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए उसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव करना ठीक नहीं है लेकिन अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए राजनीतिक दल समय–समय पर आरक्षण का सहारा लेते रहते हैं। इसी प्रकार राजनीतिक लाभ के लिए वर्तमान सरकार ने भी महिला आरक्षण का सहारा लिया है। मैं महसूस करता हूँकि वर्तमान राजनीतिक वातावरण में महिला आरक्षण लागू करना मजबूरी थी अन्यथा समाज के बीच में एक गलत संदेश जा रहा था। फिर भी मैं इतना महसूस करता हूँ कि हमें आरक्षण रूपी बुराई को कभी न कभी तो समाप्त करना ही चाहिए चाहे वह टुकड़ों में हो या एक साथ हो। आरक्षण किसी समस्या का समाधान नहीं है। आरक्षण का समाप्त होना ही समस्याओं का समाधान है। महिला आरक्षण में भी अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक दलों का स्वार्थ छिपा हुआ है फिर भी राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए मैं महिला आरक्षण कानून का समर्थन करता हूँ।

21–समाज के हित में छलपूर्वक कार्यवाही भी उचित।

भारत में कुछ मुसलमान तथा अंबेडकरवादी संबूक वध के नाम से एक कथा सुना कर भगवान राम पर आरोप लगाते हैं। मैंने वह पूरी कथा इन्हीं लोगों के मुंह से सुनी है जिसके अनुसार एक बार अकाल पड़ा और उस अकाल का कारण किसी अछूत द्वारा किए जाने वाली तपस्या थी। भगवान राम ने उस अछूत का वध कर दिया जिसका नाम शंबूक था। मेरे विचार से यह कहानी पूरी तरह कपोल कल्पित हो सकती है, लेकिन यदि यह कहानी सच है तब भी इसमें भगवान राम ने कुछ भी गलत नहीं किया। भगवान राम एक राजा थे एक कोई व्यक्ति नियम तोड़कर के इस प्रकार तप कर रहा था कि उससे अकाल पड़ गया, हजारों लोग मरने लगे, पशु पक्षी मरने लगे। ऐसे समय में भगवान राम को क्या करना चाहिए था यह एक गंभीर प्रश्न है यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर कोई

ऐसा नियम तोड़ता है जिसके कारण समाज पर भयंकर संकट आ सकता है, तो ऐसे व्यक्ति का वध कर देना राजा के लिए उचित है। मैं चाहता हूँ कि हमारे अंबेडकरवादी इस बात को बताने की कृपा करें कि क्या उस आदमी के तप करने से इतना बड़ा अकाल पड़ गया यह कहानी सच है या झूठ।

22– अब भारतीयन्यायपालिका में वामपंथ पतन की ओर।

भारतीय न्यायपालिका में भी कुछ बदलाव साफ–साफ दिख रहा है। नया समाचार यह आया है कि 30 वर्ष पहले संसद में हुए भ्रष्टाचार पर सुप्रीम कोर्ट की संवैधानिक बेंच के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट फिर से विचार करने जा रहा है। उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय भी मथुरा में एक मुस्लिम के पक्ष में दिए निर्णय कोन्यायालय बदल चुका है। विदित हो कि मथुरा में कुछ विवादास्पद भूमि मुसलमान को आवंटित कर दी थी और तत्कालीन न्यायालय ने उस आवंटन को सही ठहराया था। वर्तमान न्यायपालिका ने उस निर्णय को 22 वर्ष बाद पलट कर भूमि का स्वामित्व हिंदुओं को दे दिया है। मैं बहुत पहले से लिखता रहा हूँ कि न्यायपालिका में जे.एन.यू. संस्कृति से प्रभावित न्यायाधीशों का वर्चस्व हो गया था, जो धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। अब भारत की न्यायपालिका आंख बंद करके वामपंथ का समर्थन नहीं कर रही है बल्कि सोच विचार कर स्वतंत्रता से कुछ निर्णय किये जा रहे हैं। इस प्रकार मुझे तो न्यायपालिका सहित भारत की संपूर्ण संवैधानिक व्यवस्था में धीरे–धीरे बदलाव की संभावना नजर आ रही है।

23–भारत सरकार द्वाराआतंकवादियों के खिलाफ उठाये गयेप्रशंसनीयकदम।

कनाडा की सरकार ने यह आरोप लगाया है कि नरेंद्र मोदी सरकार ने कनाडा में कुछ सिख आतंकवादियों को मरवा दिया है। मैं नहीं कह सकता कि भारत सरकार ने ऐसा किया है या नहीं किया है लेकिन यदि भारत सरकार ने ऐसा किया है तो भारत सरकार ने बहुत ही अच्छा काम किया है। अमेरिका ने पाकिस्तान में आकर लादेन को मरवाया था तो अमेरिका की प्रशंसा हुई थी भारत सरकार ने यदि कनाडा में एक दो लोगों को भरवा भी दिया और यदि यह वास्तव में आतंकवादी थे तो हमें भारत सरकार की प्रशंसा करनी चाहिए। यदि यह घटना सच है तो मैं नरेंद्र मोदी सरकार की प्रशंसा करता हूँ। विदेश नीति पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा इस विषय में तो भारत सरकार सोचेगी किंतु भारत के अंदर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा इतना मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ। ऐसा लगता है कि मोदी है तो मुमकिन है यह नारा सार्थक होता दिख रहा है।

24–अकबर और औरंगजेब मेंफर्क और परिणाम।

अकबर और औरंगजेब दोनों ही मुगल शासक रहे हैं दोनों में जमीन–आसमान का फर्क है। अकबर की शासन प्रणाली हम सब के लिए आदर्श रही है और औरंगजेब की शासन प्रणाली से हम हमेशा नफरत करते हैं। अकबर ने दीन–ए–इलाही मजहब चलाया था अकबर और हिंदू के बीच दूरी इतनी ज्यादा घट गई थी कि हिंदू राजा अपनी लड़कियां भी अकबर को देने में संकोच नहीं करते थे। दूसरी ओर औरंगजेब ने तलवार के भरोसे इस्लाम को फैलाने की कोशिश की जिसके कारण हिंदू कट मरे लेकिन औरंगजेब से दूरी बनी रही। आज भारत का इतिहास लिखा जा रहा है। अकबर का नाम स्वर्ण अक्षरों में है और औरंगजेब का आंकलन कलंकित जगह पर। भारत के मुसलमानों को यह तय करना है कि वह अकबर के पीछे चलना चाहते हैं या औरंगजेब के। मैं तो हमेशा अकबर का प्रशंसक रहा हूँ।

25–गांधी, सुभाष, भगत सावरकर के नाम पर मतभेद फैलाना उचित नहीं है।

मैंने 25 वर्ष पहले ही यह बात साफ कर दी थी कि गांधी, सुभाष, भगत सिंह, सावरकर अब सब चले गए हैं। अब वर्तमान परिस्थितियों में नए सिरे से विचार करना चाहिए। अब गांधी,सुभाष, भगत से सावरकर तक इस सब पर कोई मतभेद फैलाना उचित नहीं है। मेरी बात उस समय संघ सावरकरवादी दोनों ने नहीं मानी, उसका परिणाम हुआ कि नरेंद्र मोदी के आने में बहुत विलंब हुआ अन्यथा नरेंद्र मोदी पहले ही प्रधानमंत्री बन गए होते। नरेंद्र मोदी ने जब महसूस किया कि मुनि जी की बात सही है तब बदलाव दिखा। और उसके बाद नरेंद्र मोदी मोहन भागवत संघ ने नई परिस्थितियों पर विचार करना शुरु किया। लेकिन जब नरेंद्र मोदी ने नई परिस्थितियों पर सोचना शुरु किया जो थोड़े से गांधीवादी बचे हुए थे उन लोगों ने फिर से संघ का विरोध शुरू कर दिया और उसका परिणाम दिख रहा है कि विरोध करते–करते गांधीवादी समाप्त होते जा रहे हैं। गांधी और नरेंद्र मोदी यह दोनों एक साथ समाज में आगे दिख रहे हैं। गांधीवादियों और सावरकरवादियों का सफाया होना निश्चित था। जो लगातार हो रहा है।मेरी फिर से सलाह कि हमें वर्तमान परिस्थितियों पर विचार करके नए तरीके से आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए।

26–समाज सशक्तिकरण यज्ञ

मैं बहुत दिनों से सब कुछ छोड़कर कुछ समय एकांत चिंतन में बिताना चाहता था लेकिन आप सब लोगों का मोह बाधक हो रहा था। स्वास्थ्य ने मुझे मजबूर कर दिया कि मैं जल्दी ही इस मोह जाल से मुक्त हो जाऊं इसलिए मैंने 15 दिनों का समाज सशक्तिकरण यज्ञ रामानुजगंज में

रखकर स्वयं को इस जाल से मुक्त करने का निश्चय किया। अगले दिन बैठक में इस बात को अंतिम रूप दिया गया। फिर नयी योजना बनी और इस अंतिम स्वरूप का अंतिम परिणाम 26 तारीख की रात को रामानुजगंज के सम्मेलन में मिल जाएगा लेकिन 26 तारीख के बाद मैं अपना सारा कार्य भार सौंप रहा हूँ मैं स्वतंत्र रूप से आप सब मित्रों के साथ विचार मंथन करता रहूंगा लेकिन ज्ञान यज्ञ परिवार का सारा कार्य संचालन अब ज्ञान यज्ञ परिवार की तरफ से मोहन गुप्ता जी, ज्ञानेन्द्र जी तथा उनकी टीम करेगी।

उत्तरार्ध

1– आज दिनांक 21–9–2023 ज्ञान यज्ञ परिवार के तत्वाधान में समाज सशक्तिकरण पखवाड़ा के तहत रामचंद्रपुर ब्लाक अंतर्गत पीपरौल गांव में एक संगोष्ठी हुई। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए देश के मौलिक चिंतक विचारक और प्रयोगधर्मी बजरंग मुनि जी ने कहा कि "आप लोगों से हम लगभग 25 वर्षों बाद मिल रहे हैं। हम मानते थे कि हम लोग यानी रामानुजगंज जिले के लोग सचमुच पिछड़े हैं, गरीब हैं और यहां के लोग शराब पीते हैं। हम लोग भी इस बात को मान लेते थे कि सचमुच हम लोग पिछड़े हैं। फिर फॉरवर्ड समाज को ढूंढने के लिए मैं देशभर में घुमता रहा। पहले दिल्ली गया फिर हरिद्वार फिर ऋषिकेश हमें लगा कि यहां के लोग फॉरवर्ड होते हैं, फिर हमने देखा कि दिल्ली में तो राजनीति के लिए एक बड़ी मंडी है और यहां बड़े पैमाने पर राजनीति का व्यापार होता है। फिर हम हरिद्वार गए तो वहां भी देखा कि यहां पर भी धर्म का व्यापार होता है वहां भी मेरा मन नहीं लगा तो हम ऋषिकेश चले गए वहां भी हमने देखा कि धर्म का यहां पर भी बड़े पैमाने पर व्यापार होता है। यहां तो मानवता इंसानियत है ही नहीं फिर मुझे लगा कि रामानुजगंज में तो मानवता इंसानियत का व्यापार नहीं बल्कि वहां पर मानवता और इंसानियत का व्यवहार होता है।" मुनि जी ने फिर कहा कि हमने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे रामानुजगंज को अपमानित होना पड़े। आगे मुनि जी ने कहा कि आज रामानुजगंज पूरी तरह दुनिया को चुनौती देने की स्थिति में है क्योंकि हर जगह इस बात का खतरा है कि कहीं हिंदू मुस्लिम का झगड़ा कहीं चोरी, डकैती, धोखाधड़ी आज बड़े पैमाने पर हो रहा है लेकिन हमारे इलाके में आज भी घरों में ताले नहीं लगता इस परंपरा को बचाना है और दुनिया में फैलाना है इसीलिए हम आज गांव–गांव घूम कर समाज सशक्तिकरण पखवाड़ा के तहत इसका प्रचार प्रसार कर रहे हैं। लेकिन खतरा इस बात का बना हुआ है कि समाज में तथाकथित फॉरवर्ड हमारी एकता पर नजर लगाए हुए हैं कि कैसे इस एकता को तोड़ दिया जाए संगोष्ठी में मोहन गुप्ता, ज्ञानेंद्र जी, आचार्य सुनील देव, रामराज साहू, सुनील विश्वास, आलोक यादव, जनेश्वर राम, जतन यादव, अनुज यादव, शिवपूजन तिवारी,

देवनाथ अगरिया, संजय चौबे, मोहन सिंह, अभय सिंह आदि उपस्थित थे।

2– 13 सितंबर 2023 को मरमा ग्राम में समाज सशक्तिकरण यज्ञ संपन्न हुआ। यज्ञ में बजरंग मुनि जी भी उपस्थित रहे। मुनि जी ने अपने उद्‌बोधन में समाज सशक्तिकरण की आवश्यकता बतायी। वर्तमान समय में गांव–गांव तक अपराधी तत्व मजबूत होते जा रहे हैं और शरीफ लोग उनसे दबे हुए हैं यह स्थिति अच्छी नहीं है। इस वातावरण में बदलाव के लिए गांव स्तर तक के लोगों को एकजुट होना आवश्यक है। ज्ञान यज्ञ परिवार इस समाज सशक्तिकरण की दिशा में निरन्तर सक्रिय है। मुनि जी ने उपस्थित ग्रामवासियों से निवेदन किया कि वे मरमा ग्राम में ग्राम केंद्र स्थापित करें। यह निवेदन सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया। सब लोगों ने एकजुट होकर प्रस्ताव पारित किया कि मरमा ग्राम में प्रतिवर्ष एक बड़ा समाज सशक्तिकरण यज्ञ आयोजित किया जाएगा। इस ज्ञान केंद्र के संचालन का दायित्व उदयशंकर शर्मा (बब्लू पंडित) ने लिया साथ ही जिला कमेटी के लिए उदयशंकर जयसवाल जी को चुना गया। जिला ज्ञान यज्ञ परिवार प्रमुख मोहन गुप्ता जी ने भी उपस्थित ग्रामवासियों को संबोधित किया। इस तरह मरमा ग्राम में ज्ञान केंद्र प्रारंभ करने के साथ–साथ समाज सशक्तिकरण यज्ञ संपन्न हुआ।

सामाजिक सुरक्षा की भावना का टूटना, लोगों में बढ़ती हिंसा और आक्रोश का कारण- बजरंग मुनि

दिनांक 26 सितम्बर 2023 को रामानुजगंज बलरामपुर जिले के आमंत्रण धर्मशाला में ज्ञानयज्ञ परिवार द्वारा संचालित समाज सशक्तिकरण पखवाड़ा का समापन किया गया। यह पखवाड़ा 12 सितंबर से लेकर 26 सितंबर तक चला। इसके अंतर्गत रामानुजगंज नगर के सभी वार्डों के अलावा रामचन्द्रपुर, मरमा, महावीरगंज, धनपुरी नगरा, चाकी, गांज़र एवं पिपरौल के आसपास के गांवों में भी अभियान को यज्ञ, मानसपाठ जैसे धार्मिक एवं वैचारिक विचार–मंथन के साथ सकुशल चलाया गया। कार्यक्रम समापन के अवसर पर देश के मौलिक चिंतक समाजविज्ञानी बजरंग मुनि जी उम्र और स्वास्थ्य को देखते हुए सभी सामाजिक कार्यों से मुक्ति की घोषणा की और अपनी सारी जिम्मेदारी रामानुजगंज के लोगों द्वारा बनाई गई कमेटी को सौंप दिया। उन्होंने इस अवसर पर खचाखच भरे हाल में अपने बहुत से अनुभवों को शेयर किया। उन्होंने कहा कि मैं अपने पूरे जीवन भर प्रयोग ही करता रहा। 18 माह तक इमरजेंसी में जेल में रहे फिर राजनैतिक जीवन में भी सक्रिय रहे, फिर 1984 में हमने राजनीति को त्याग दिया और समाज विज्ञान पर शोध को अपना लक्ष्य बना लिया। समाज में बहुत से त्यागी पुरुष है जो अपना घर बार छोड़कर कठिन जीवन जीते हुए समाज को बेहतर बनाने के लिए काम करते रहते हैं। यदि इन लोगों को एक जगह बैठाकर सही दिशा दिया जाए तो यह लोग दुनिया बदल सकते हैं। विपरीत विचारधारा के लोग एक साथ

नहीं बैठते ना ही उनके बीच कोई चिंतन मंथन होता है। मैंने इस दिशा में एक अभिनव प्रयोग किया यही कारण है कि हमारे टीम में मार्क्सवादी, गांधीवादी, सोशलिस्ट, मध्यमार्गी, आनंद मार्गी, सर्वोदय, आर्य समाज, गायत्री परिवार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, धार्मिक, नास्तिक, आदि सभी तरह के लोग एक साथ मिलकर काम करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि समाज के लोगों में विभिन्न प्रकार के वर्ग बना कर एक दूसरे को लड़ाने का कुचक्र हर तरफ से हो रहा है। उन्होंने लोगों के मन में सामाजिक सुरक्षा की भावना का टूटना सभी प्रकार की विसंगतियों का मूल बताया। व्यक्ति जब असुरक्षित महसूस करता है तब वह लोगों में शत्रु अथवा मित्र जैसा भेद करने लगता है। सुरक्षा के इंतजाम में वह और भी अनेक शत्रु बनाकर सामाजिक समरसता को नष्ट–भ्रष्ट कर देता है। उन्होने ज्ञानयज्ञ परिवार के जिला अध्यक्ष श्री मोहन गुप्ता जी को अपना प्रतिनिधि बताते हुए उनका हर सम्भव साथ देने की सभा से अपील की। मोहन गुप्ता जी ने "भारत के एक मात्र अपराध नियंत्रित नगर" के गौरव को याद करते हुए पुराने साथियों को याद किया एवं नए साथियों का आभार व्यक्त कर सबकी सलाह से रामानुजगंज के गौरवशाली अतीत को नई ऊंचाईयों तक सब के साथ ले चलने का आश्वासन दिया। ज्ञानयज्ञ परिवार के संरक्षक श्री कन्हैयालाल अग्रवाल एवं राम सेवक गुप्ता आदि ने भी सभा को संबोधित कर ज्ञानयज्ञ परिवार एवं मुनि जी के कृतित्व का स्मरण किया। नगर पंचायत के अजय गुप्ता जी ने नगरवासियों कि तरफ से मुनि जी से आग्रह किया कि वे संस्थानिक ढांचे को सुदृढ़ करने के लिए एक वर्ष तक और नगर की जिम्मेदारी उठाएं। अशोक जायसवाल जी ने भी सभा को सम्बोधित कर उनकी मांग का समर्थन किया। जिस पर मुनि जी ने आश्वासन दिया कि जल्दी ही वे कनहर नदी के तट पर एक ज्ञानकेन्द्र आश्रम स्थापित कर उसमें रहने आ जायेंगें। सभा को श्री अशोक जी प्रधानाचार्य लिटिल फ्लावर स्कूल, आमंत्रण धर्मशाला के अतुल गुप्ता जी, अजय केसरी जी, रवि रंजन पाल जी, बाबू अमीरचंद, प्रमोद केसरी, दिलीप केसरी, रमेश गुप्ता, राजू गुप्ता, राजेन्द्र जायसवाल, राजेश प्रजापति, शंकर केसरी, सुनील केसरी, संजय अग्रवाल, एस पी निगम गायत्री परिवार, नरेश ठाकुर, पाठक सर एवं पाण्डेय सर आदि नगर के भद्रजनों ने सुशोभित किया। ग्राम एवं वार्डों के प्रतिनिधियों सहित तातापानी महायज्ञ समिति के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

नाटक 'एक ही रास्ता' का अंतिम भाग -

भाग 4 दृश्य एक

(मंच पर नेता जी, सेठ जी. एक गरीब मजदूर एक शिक्षक.....बैठे है।)

नेता विरोधीदल– सच बात है इस गीत में कि आज कमरतोड़ महंगाई हो गई है।

किसान– देखिये न। पिछले साठ वर्षो में मजदूरी कितनी बढ़ गई। बिजली, खाद, पानी का मूल्य लगातार बढ़ा है। पिछले तीन चार वर्षों में ही बिजली, डीजल, पानी सब कई गुना महंगा हो गया।

व्यापारी– मजदूर तो आजकल मिलता ही नहीं। हर साल पांच दस रुपया रेट बढ़ जाता है। पता नहीं मजदूरी कहाँ जाकर रुकेगी।

शिक्षक– सबसे ज्यादा परेशान तो हम शिक्षक लोग है। बाकी कर्मचारी तो कुछ दो नंबर की भी कमाई कर लेते है किन्तु हमें तो शुद्ध वेतन पर ही जीना है। मेरे पिताजी तीन रूपया किराया में अम्बिकापुर चले जाते थे। आज तो तीन रुपया में आरागाही भी नहीं जा सकते। अनाज कपड़ा के दाम तो ऐसा बढ़े है कि समझ में ही नहीं आता कि क्या खायें और कैसे खाये।

सेठजी– आप लोग तो बेकार का रोना रोते हो। असली महंगाई से तो हम लोग परेशान है। जमीन का दाम ऐसा बढ़ा कि घर बनाना ही सपना हो गया। सीमेंट, लोहा आसमान छू रहा है। सब्जी की तो कोई चर्चा ही नहीं किया करता क्योंकि आप लोग जब सब्जी खरीदते खाते ही नहीं तो महसूस ही क्यों करेंगे।

मजदूर– वास्तव में तो हम लोग महंगाई से परेशान है। काम कभी मिलता है कभी नहीं मिलता। सरकार पच्चीस किलो सस्ता राशन देती है तो पूरे परिवार का पंद्रह दिन में ही खतम। सरकारी स्कूल में पढ़ाई होती नहीं और बाहर हम पढ़ा नहीं सकते। पढ़ाई भी महंगी होती जा रही है। यदि एक दिन सरसों तेल खाने का मन करें तो सूंघ कर ही संतोष करना पड़ता है।

सेठ जी– तुम तो बेकार महंगाई महंगाई चिल्लाता है। पहले किसान दिन भर की मजदूरी दो किलो अनाज देता था। अब पांच किलो देता है। तो अनाज सस्ता हुआ कि महंगा तुम लोगों की तो आदत हो गई है।

किसान– ठीक कह रहे हैं सेठ जी। ये मजदूर अनाज ज्यादा लेने लगे और काम कम करने लगे। वास्तविक समस्या तो हम किसानों की है जो महंगाई से परेशान है।

नेता विरोधीदल– सच्चाई यही है कि हर चीज महंगी हो गई है और हर आदमी परेशान है जब तक यह सरकार नहीं बदलती तब तक महंगाई रुक ही नहीं सकती।

पण्डित जी– किन्तु नेताजी पांच वर्ष पहले जब आपकी सरकार थी तब भी तो महंगाई का ऐसा ही हल्ला था। मुझे याद है कि प्याज और टमाटर ने आपकी सरकार ही बदल दी थी।

नेता विरोधीदल– आप कहना क्या चाहते हैं पण्डित जी? क्या वस्तुएँ महंगी नहीं हुई है।

पण्डित जी– बिल्कुल नहीं हुई है। महगांई तो बढ़ी ही नहीं आज से 60 साल पहले 1 रू में ½ kg घी मिलता था आज 1700 रू. में 1 किलो मिलता है पहले रूपया चांदी का होता था आज रूपये का मूल्य घटा है जिसे आप महगांई कहकर असंतोष पैदा कर रहे है।

नेता विरोधीदल– इसका मतलब ये सब मूर्ख हैं, जो महंगाई से परेशान हैं।

पण्डित जी– राजनैतिक रोटी सेकने के लिए मुद्रा–स्फीति को महंगाई कहकर आप लोग जनता में असंतोष पैदा करते हैं। साठ वर्ष पहले भी महंगाई का ऐसा ही हो–हल्ला था जैसा आज है आप लोग महंगाई–महंगाई कहकर अपना वेतन तो कई गुना बढ़ा लिये, हम लोग चाहे जैसे रहें।

नेता विरोधीदल– इस अंधे को महंगाई नहीं दिख रही। सब लोग महंगाई से परेशान हैं तो यह पण्डित यहाँ आया है अपनी वकालत करने। भाग यहाँ से! नहीं तो तुम्हे वास्तव में महगाई दिखा देंगे।

(पण्डित बेचारा बड़बड़ाता हुआ जाता है)

नेता विरोधीदल– बताओ इस पण्डित को महगाई ही नहीं दिख रही। यहाँ हम आप सबकी कमर टूटी जा रही है और इस पण्डित को बहस में मजा आ रहा है। हमें तो महंगाई के खिलाफ आंदोलन करना ही चाहिये।

दृश्य दो–(नेता जी को छोड़कर बाकी सब बैठे हैं)

पण्डितजी– आप सब महंगाई से इतना परेशान है तो आप सुझाव दें कि किस चीज को सस्ता कर दिया जाय जिससे महंगाई का प्रभाव न हो।

मजदूर– पण्डित जी, अनाज, दाल, तेल आदि का दाम घट जाय तो बहुत राहत मिले।

किसान भड़ककर– यह कैसे संभव है। किसान तो बेचारा आत्महत्या तक कर रहा है. कर्ज में डूबा जा रहा है तीस चालीस वर्ष पहले एक दिन की मजदूरी दो किलो अनाज थी। अब हम पाच किलो अनाज दें तब भी मजदूर नहीं मिलते। अनाज को सस्ता न करके यदि डीजल पेट्रोल बिजली सस्ती कर दी जाये तो किसान खुश हो जायेगा।

सेठ– बिल्कुल ठीक कहा आपने। ऐसा ही होना चाहिये। एक पंथ दो काज किसान भी खुश और व्यापारी भी खुश।

मजदूर– तब हमारा क्या होगा? आप दोनों सस्ती बिजली सस्ता, डीजल, पेट्रोल पाकर

और मशीने बढ़ा लोगे किन्तु हम मजदूर तो बेरोजगार हो जायेंगे। साठ वर्षों में मजदूरी दो किलो अनाज से बढ़कर चार किलो हुई तो क्या हुआ? प्रतिवर्ष देश में पांच से दस प्रतिशत विकास के आधार पर तो हमें अब तक दस किलो अनाज मिलना था।

पण्डित जी– तो बताइये न आप सब मिलकर कि महंगाई कितना प्रतिशत कम की जाय और किन चीजों पर कम की जाय।

किसान– सब चीजों का दाम घटा दिया जाय तो कोई हर्ज नहीं।

उद्योगपति– बिल्कुल ठीक है। सब चीजें पचास वर्ष पूर्व के भाव पर मिलने लगे तो मजा आ जाये।

मजदूर– बिल्कुल ठीक है

पण्डित– तो बताइये भाई कि यदि पचास रूपये के नोट पर एक रूपया लिख दिया जाये तो क्या दिक्कत होगी।

मजदूर– बहुत अच्छा हो जाएगा 1 रू. में सब मिल जाएगा।

पण्डित जी– और मजदूरी भी तो डेढ़ रूपया ही मिलेगा।

सेठ– बहुत अच्छा होगा। मजदूरी कम होना तो अच्छा होगा।

पण्डित जी– आपका बैंक में जमा पचास लाख रूपया भी तो एक लाख हो जायेगा।

सेठ– तब क्या फायदा होगा?

पण्डित जी– महंगाई एक भ्रम है। नेता और अफसर अपना वेतन बढ़वाने के लिये भ्रम फैलाते है। साठ वर्ष पहले कोदो खाने वाला मजदूर चावल खा रहा है। सेठजी फल और सेव का नास्त पहले भी करते थे क्या? पुराने जमाने में भी तीर्था यात्रा इस तरह होती थी। महंगाई भ्रम है।

किसान– किन्तु यह भ्रम फैलाया क्यों जाता है?

पण्डित जी– किसान, मजदूर व्यापारी कभी ना समझ सकें कि उनके अपने उत्पाद और उपभोग की वस्तुओं पर सरकार गुप्त रूप से भारी कर ले लेती है। क्या आप जानते हैं कि सरकार गेहूँ, चावल, दाल, तेल पर भारी टैक्स वसूल लेती है। सरसों तेल पर आठ रुपया लीटर टैक्स वसूलकर महंगाई का रोना रोती है।

मजदूर– लेकिन सरकार छूट भी तो देती है।

पण्डित जी– यही तो तुम्हे पता नहीं भाई। सरकार साइकिल पर तो तीन सौ रूपया टैक्स वसूलती है और रसोई गैस पर दो सौ रूपया छूट दे देती है बताओ तुम्हारे लिए साइकिल ज्यादा उपयोगी है या रसोई गैस।

सेठ– रसोई गैस।

मजदूर– चुप रह रे सेठ। हमें तो पता ही नहीं था कि ऐसा भी होता है।

अनाज, दाल, तेल आदि हम जो पैदा करते है उस पर भी भारी कर और

कपड़ा लोहा सीमेंट आदि उपयोग करते है उस पर भी टैक्स। यह तो हमें आज ही मालूम हुआ। हम नेता जी से पूछते है।
(सब नेता जी से जाकर पूछते हैं कि क्या हमारे सब प्रकार के ग्रामीण उत्पादन और उपयोग की वस्तुओं पर सरकार भारी टैक्स लेती है।)

नेता– कौन बताया तुमको ये?

किसान– पंडित जी ने बताया और हमें भी लगता है कि यह बात सच है।

(नेता पंडित को मारने को दौड़ता है। पंडित भागता है सब बीच बचाव करते हैं।)

गीत– (1) साजिशों के अड्डे अब मन्दिरों के नाम हो गये।
अर्थतन्त्र में यह सभी, देखिये गुलाम हो गये।।

मौत बिक रही है यहां आदमी जिये कैसे।
खून से भी अब ज्यादा, खंजरों के दाम हो गये।।

आदमी उजाले से अब बचा रहा दामन।
चेहरे अन्धेरे में एक से तमाम हो गये।

अर्थ हीन शब्द हो गये धर्म का किताबो के।
देवता दुकानों में अब सभी नीलाम हो गये।।

नाम पर तरक्की के रास्ते हुए चौड़े।
फिर भी बात क्या है. यहां, पांव बढ़ते जाम हो गये।।

बन्दगी के हाथ अब यहां, जिंदगी को लूटने लगे।
जाहिलों के हर तरफ यहां, देखिये मुकाम हो गये।।

कल तलक जो सीता का कर रहे थे अपहरण यहां।
देखता हूँ आज वो, 'रसिक' मंदिरों में राम हो गये।।

(2) कलियाँ सुमन सुगन्धों वाला यह उद्यान स्वदेशी हो।
हर क्यारी हर खेत स्वदेशी हर खलिहान स्वदेशी हो।।
तन मन धन की जन जीवन की प्रिय पहचान स्वदेशी हो,

मान स्वदेशी आन स्वदेशी अपनी शान स्वदेशी हो।

वीर शहीदों के सपनों का हर अभियान स्वदेशी हो.
एड़ी से चोटी तक सारा हिन्दुस्तान स्वदेशी हो।

अभिमन्यु–सा चक्रव्यूह में मेरा भारत देश घिरा,
पथ की मंजिल को रथ रोके, कहाँ क्षितिज का स्वर्ण सिरा,
सजे खड़े हैं द्रोण, कर्ण और दुष्ट दुशासन, दुर्योधन,
कौन दुधिष्टिर, भीम, नकुल, सहदेवों को दे उद्‌बोधन,

जो अर्जुन का मोह मिटा दे यह भगवान स्वदेशी हो।
एड़ी से चोटी तक सारा हिन्दुस्तान स्वदेशी हो ।।

मन गिरवी है. तन गिरवी है गिरवी है हर स्वांस यहाँ,
बढ़ता जाता कर्ज निरंतर नहीं बची कुछ आस यहाँ,
गांधी तेरी खादी रोती देख दशा इस देश की,
राष्ट्र अस्मिता सिया सरीखी बंदी है लंकेश की।

भावी भारत का संविधान सहयोग राशि ₹50	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सटीक विश्लेषण करती, देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
मुनि मंथन निष्कर्ष सहयोग राशि ₹50	श्रद्धेय मुनि जी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचार मंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देशव्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
मौलिक व्यवस्था का विचार सहयोग राशि ₹50	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक।
बस अब बहुत हो चुका सहयोग राशि ₹50	व्यवस्था की खामियों एवं उसके समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाडिया जी ने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठभूमि को तैयार करती है।
मुनि मंथन सहयोग राशि ₹10	श्रद्धेय मुनि जी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में यह पुस्तक पठनीय है।
रामानुजगंज एक आवाज सहयोग राशि ₹10	श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए कलेवर में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
एक ही रास्ता सहयोग राशि ₹10	नुक्कड़ नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।
इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने पर मात्र ₹100 की आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। मात्र ₹100 और डाक खर्च अतिरिक्त देकर इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–8318621282,7869250001,9617079344	

हमारी संस्थाएँ

● मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान ● ज्ञान यज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य ● समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार के कार्य

● देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

● ज्ञान चर्चा-प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।

महायज्ञ ● वर्ष में एक बार या दो बार बड़े सामुहिक यज्ञ का आयोजन।

मार्गदर्शक मंडल

● ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।

ज्ञान कुंभ

● वर्ष में दो बार पंद्रह-पंद्रह दिनों के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्ग दर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो-दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- फेसबुक एप से प्रसारण
- वाट्सएप ग्रुप से प्रसारण
- जूम एप पर वेबिनार
- यू टयूब चैनल
- इंस्टाग्राम
- टेलीग्राम
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरू हो गया है। इसकी सहयोग राशि रू. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है। लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक-68939/98

डाक पंजीयन क्रमांक- छ.ग./रायगढ़/010/2022-2024

प्रति,

श्री/श्रीमती _____

_____

_____

_____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोक तंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रुपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

– बजरंगलाल

पत्र व्यवहार का पता

पता - बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492001
Website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी - बजरंगलाल

09617079344

Email : bajrang.muni@gmail.com
support@margdarshak.info
Facebook Id : बजरंग मुनि (User Name)

मुद्रक - माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)